Read India Books

# गंगा की लहरें...

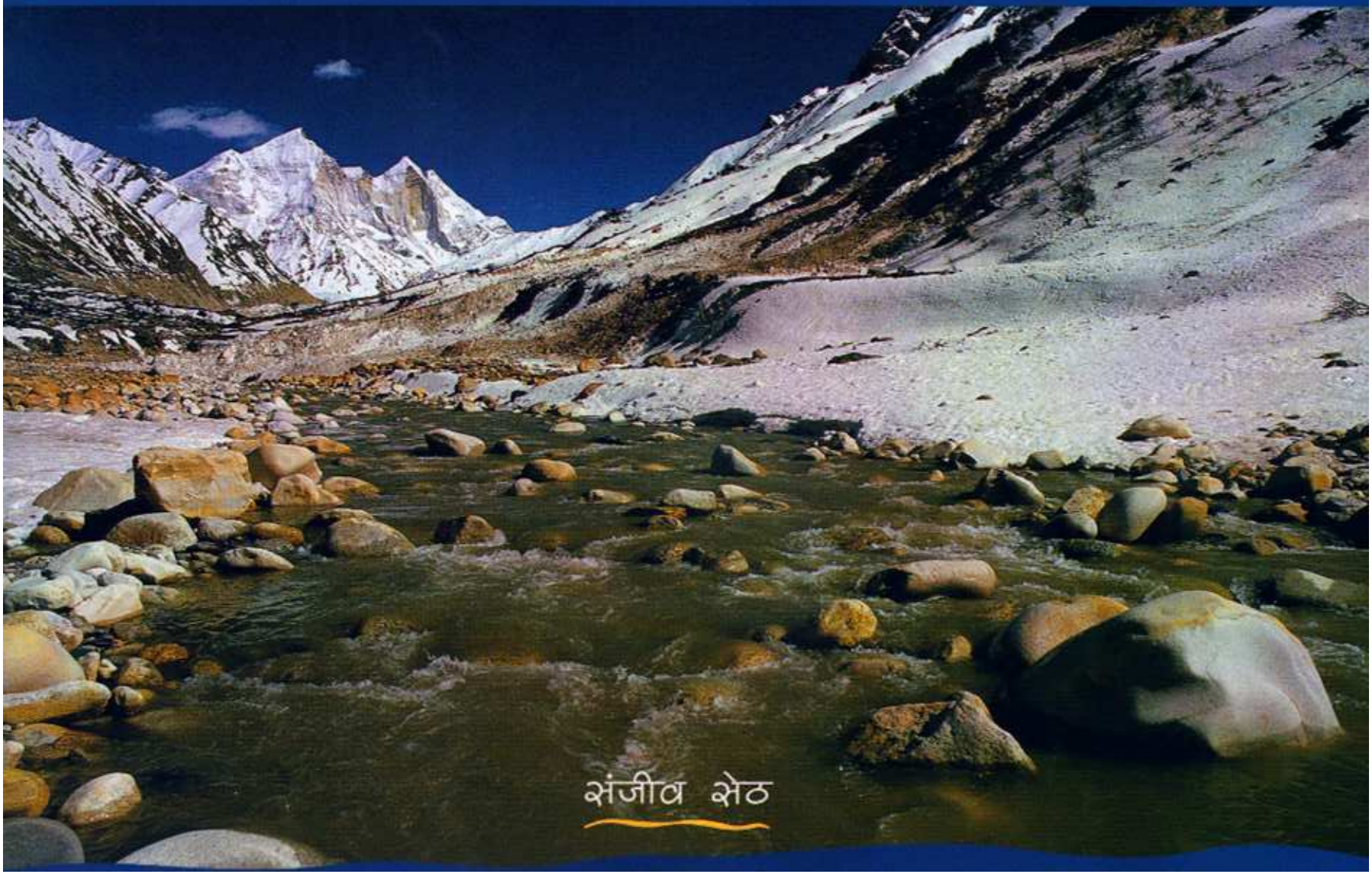

संजीव सेठ

गंगा नदी को हमेशा से भारतवासियों का प्रेम और आदर मिलता आया है। ऐसा क्यों न हो... गंगा के निर्मल पानी ने ही तो उन्हें सदियों से जीवन प्रदान किया है। आओ, हम मिलकर इस पुस्तक में हिमालय के ठंडे सफ़ेद पहाड़ों से बंगाल की खाड़ी तक गंगा जी की लहरों का सफ़र करें...

MRP Rs. 25.00
ISBN 81-8263-152-1

Photographs and Captions © Sanjeev Saith
Song Lyrics © Respective Lyricists / Producers

First Edition: 2005

ISBN: 81-8263-152-1

PRATHAM BOOKS
Registered Office:
930, 4th Cross, 1st Main,
MICO Layout, Stage 2,
Bangalore 560 076

Regional Offices in Mumbai and New Delhi

Design: DesignCumulus

Printed by: International Print-O-Pac Limited, New Delhi

Published by: Pratham Books | www.prathambooks.org

The development of this book has been supported by Ania Loomba and Suvir Kaul

प्रथम बुक्स (www.prathambooks.org) एक गैर सरकारी संस्था है जो अनेक भारतीय भाषाओं में बच्चों के लिये उच्च कोटी की किताबें प्रकाशित करती है। हम मानते हैं कि हर बच्चे को अच्छी किताबें पढ़ने का हक़ है।

# सखी के लिए

बच्चों का ध्यान प्रकृति की ओर आकर्षित करने के लिए कुछ गीतों की पंक्तियों का उपयोग किया गया है। इनके गीतकारों के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं :

| | |
|---|---|
| • प. 2, 3, 19 | भरत व्यास |
| • प. 4, 5, 12, 13 | गुल्ज़ार |
| • प. 6, 7, 10 | साहिर लुधियानवी |
| • प. 8, 9, 11 | शैलेन्द्र |
| • प. 14 | हसरत जयपुरी |
| • प. 15 | आनन्द बक्षी |
| • प. 16 | रवीन्द्र जैन |
| • प. 17 | अंजान |
| • प. 18 | इन्दिवर |

# गंगा की लहरें

संजीव सेठ

हरी हरी वसुन्धरा पे नीला नीला ये गगन,
के जिसपे बादलों की पालकी उड़ा रहा पवन,
दिशाएँ देखो रंग भरी,
चमक रहीं उमंग भरी,
ये किसने फूल फूल पे किया श्रृंगार है,
ये कौन चित्रकार है,
ये कौन चित्रकार...

• तपस्वियों सी हैं अटल ये पर्वतों की चोटियाँ...
ये किस कवि की कल्पना का चमत्कार है, ये कौन चित्रकार है, ये कौन चित्रकार...

• हिमालय के ऊँचे वर्फ़ीले पहाड़ों में स्थित यह सुन्दर पर्वत शिवलिंग के नाम से प्रसिद्ध है।

गंगा आए कहाँ से,
गंगा जाए कहाँ रे...

शिवलिंग पर्वत के पास गौमुख की पिघलती बर्फ़ में गंगा जी का जन्म होता है।

• आए कहाँ से, जाए कहाँ रे,
लहराए पानी में जैसे धूप छाँव रे...

• पिघलती बर्फ़ की अनेक बहती धाराएँ मिलकर नदी का रूप धारण कर लेती हैं। यहाँ गंगा जी को भागीरथी के नाम से पुकारा जाता है।

• नदियों के ये राग रसीले,
झरनों का ये शोर, बहे झर झर पानी ...

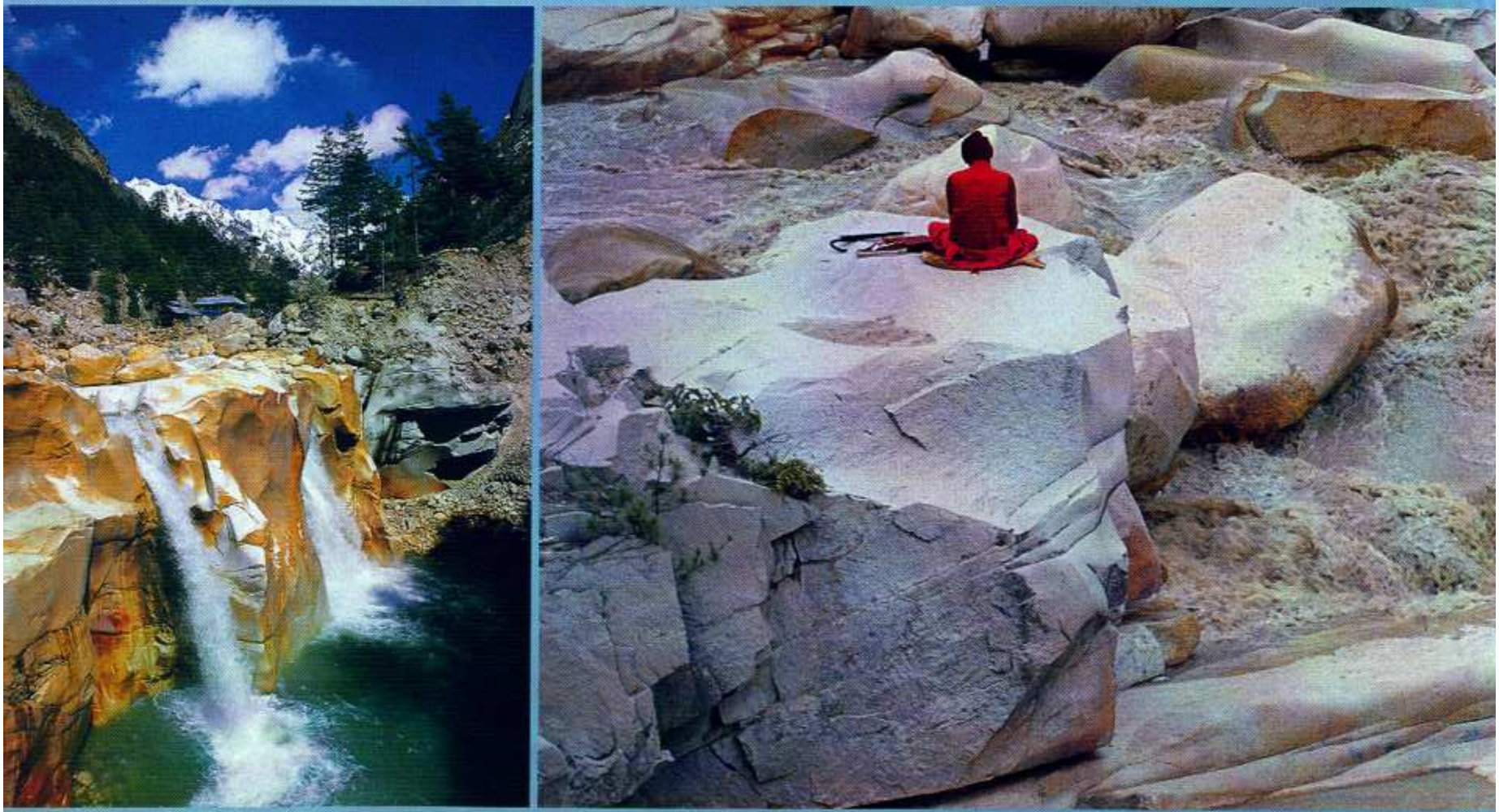

• चट्टानों पर बहती यह चंचल भागीरथी नदी गंगोत्री पहुंचती है।

• परबत ऊपर खिड़की खोले,
झांके सुन्दर भोर, चले पवन सुहानी...

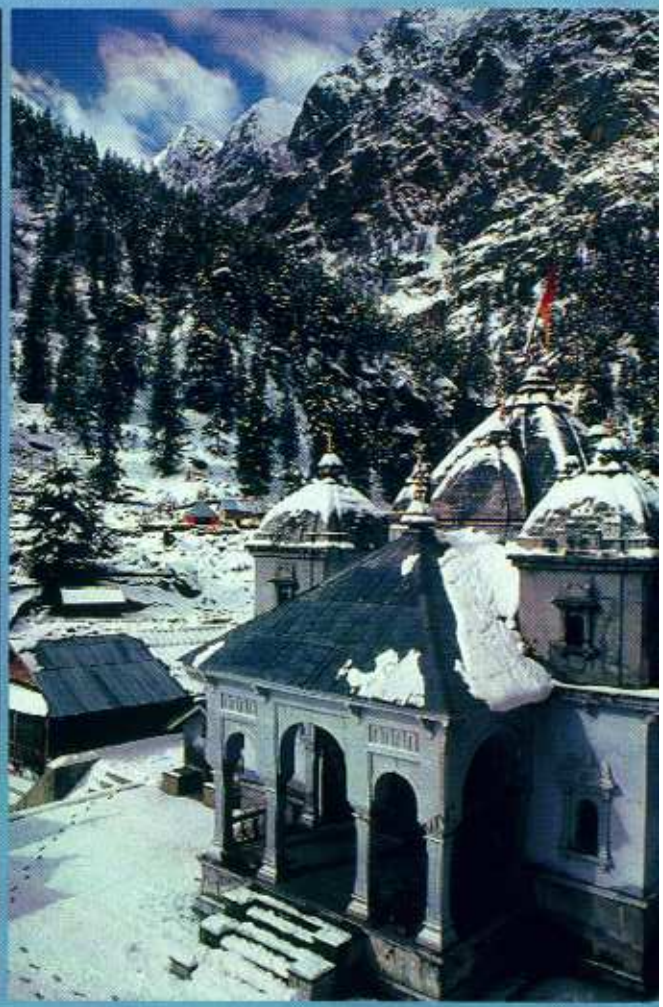

• गंगोत्री के एकांत में ऋषि-मुनी ध्यान करने आया करते हैं।

• गंगोत्री में गंगा जी का मन्दिर भी स्थापित है।

• दो नदियों का मेल अगर इतना पावन कहलाता है...

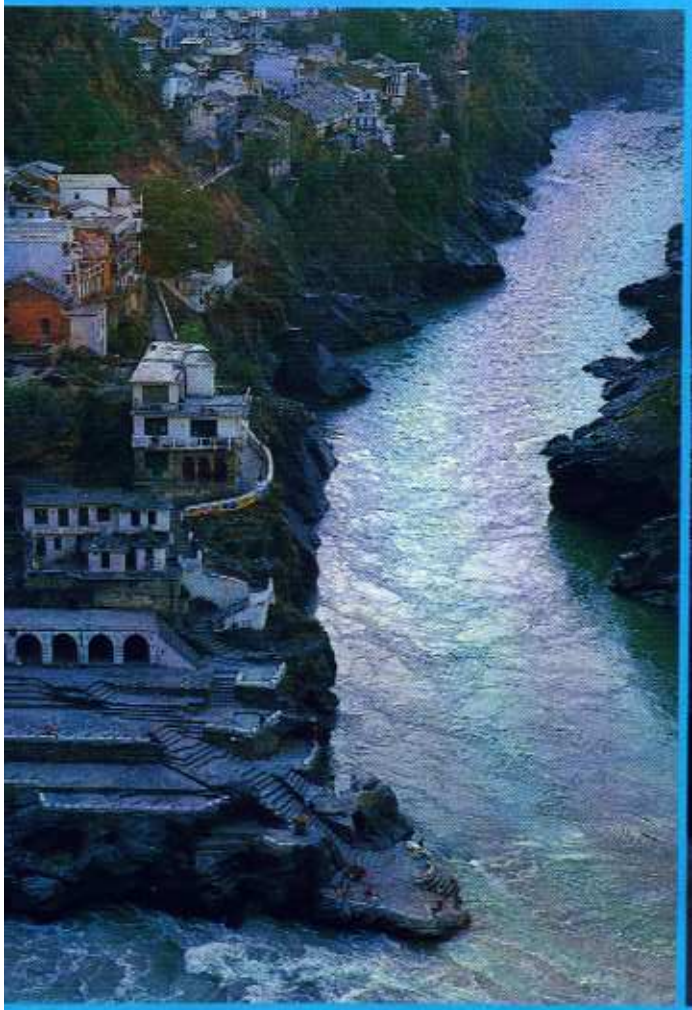

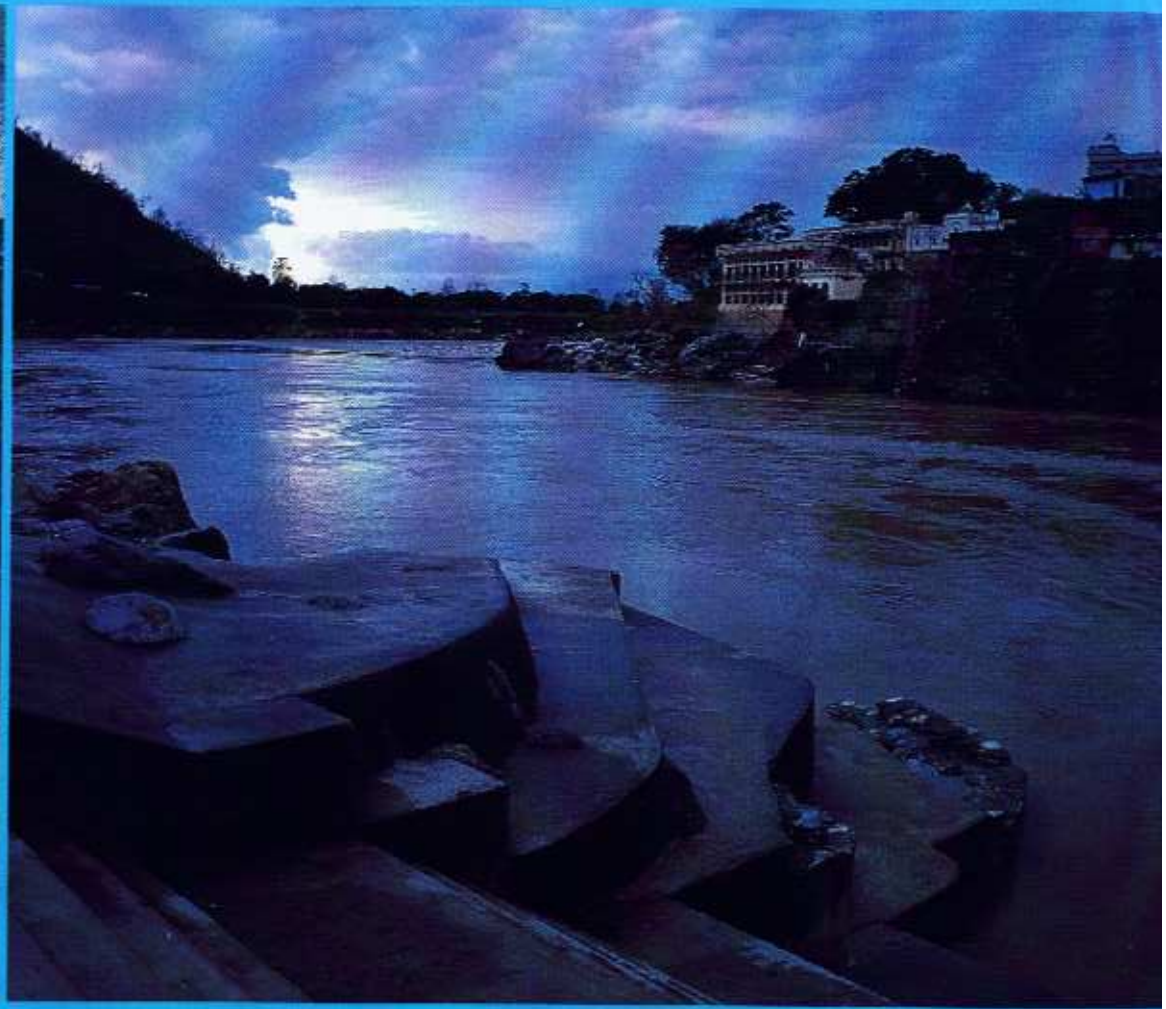

• देवप्रयाग में भागीरथी और अलकनन्दा नदियों का संगम होता है। दोनों मिलकर अब गंगा कहलाती हैं।

• पहाड़ों से निकल कर गंगा नदी ऋषिकेश की समतल भूमि पर बहने लगती है।

• क्यों ना जहाँ दो दिल मिलते हैं, स्वर्ग वहाँ बस जाता है...

• हरिद्वार एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थान है।

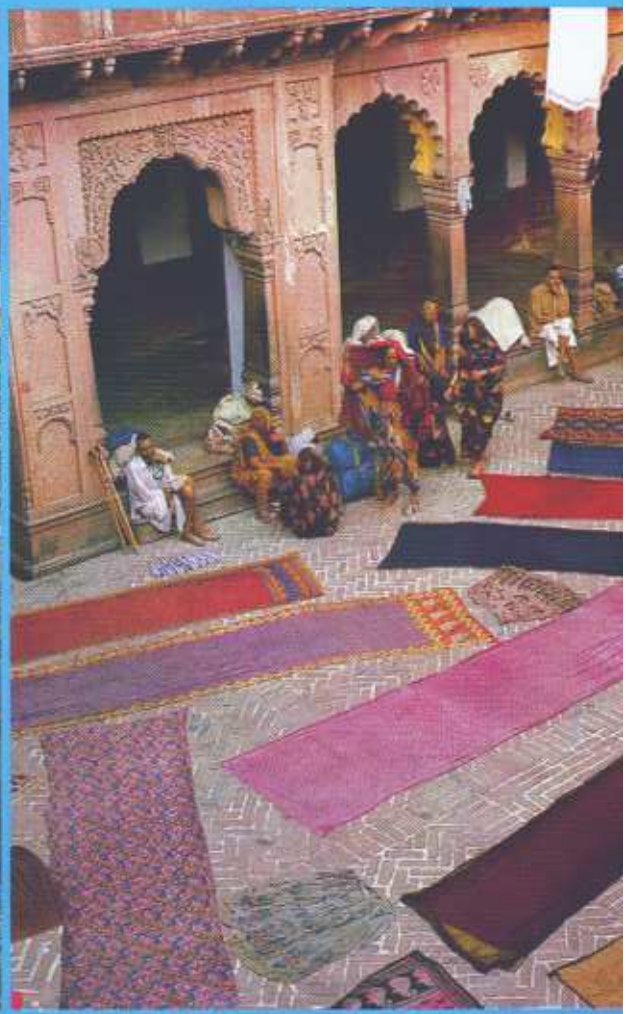

• तीर्थ यात्री हरिद्वार की धर्मशालाओं में शरण लेते हैं।

• गंगा तेरा पानी अमृत, झर झर बहता जाए,
युग युग से इस देश की धरती तुझ से जीवन पाए...

• खेतों को सींचने के लिए गंगा का पानी नहर में बाँध लिया गया है।

थम गया पानी, जम गई काई,
बहती नदिया ही साफ़ कहलाई...

नहर से दूर, गंगा का धीमा बहाव शहरों के मल से दूषित हो जाता है।

• नाम कोई, बोली कोई, लाखों रूप और चेहरे...

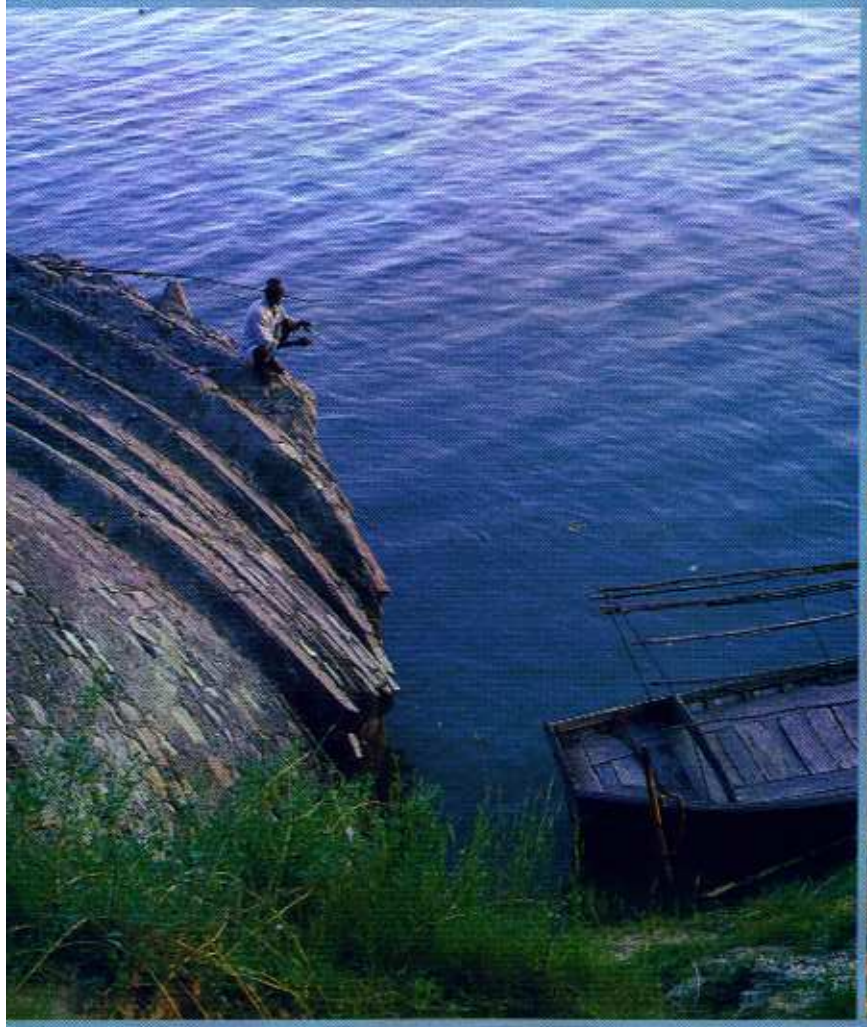

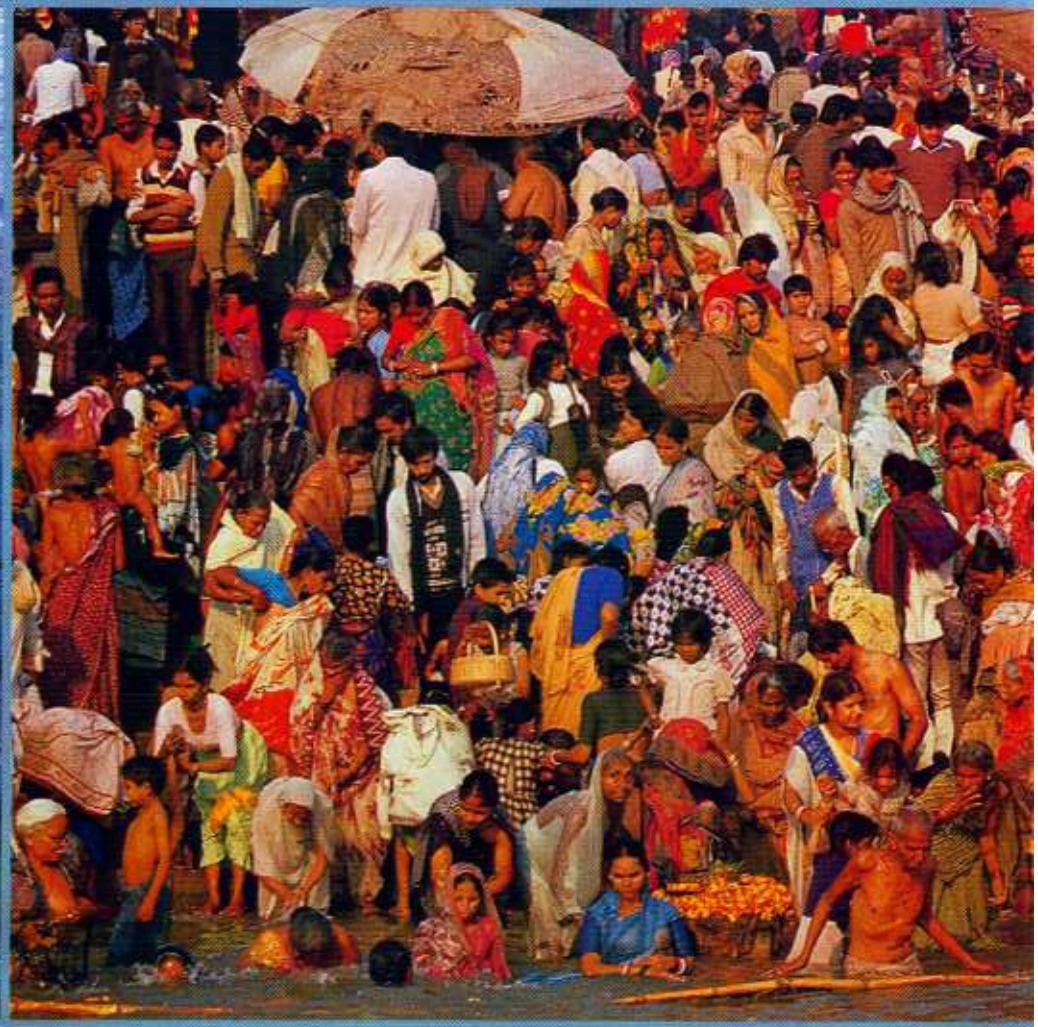

• इलाहाबाद में यमुना नदी के संगम से गंगा को नया जीवन मिलता है।

• खोल के देखो प्यार की आँखें, सब तेरे सब मेरे...

• काशी के घाटों पर गंगा जी में स्नान करने देश भर से तीर्थयात्री आते हैं।

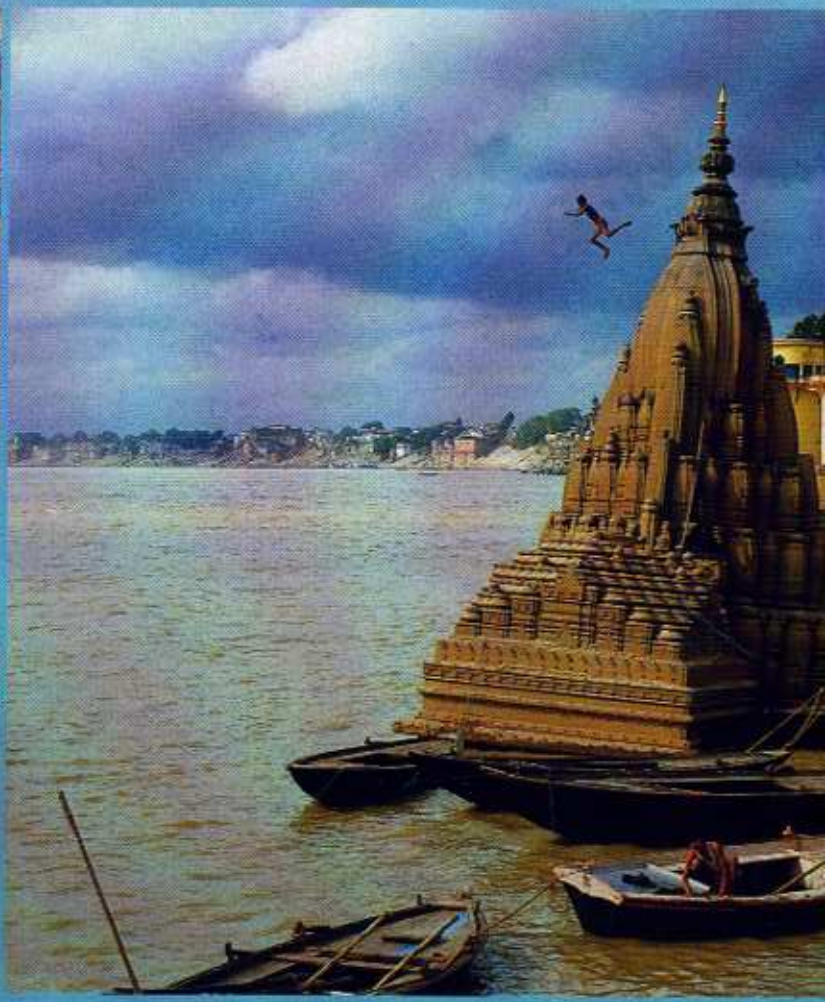

• बरसात में गंगा जी का पानी बनारस के मन्दिरों को घेर लेता है।

## • गीत गाया पत्थरों ने...

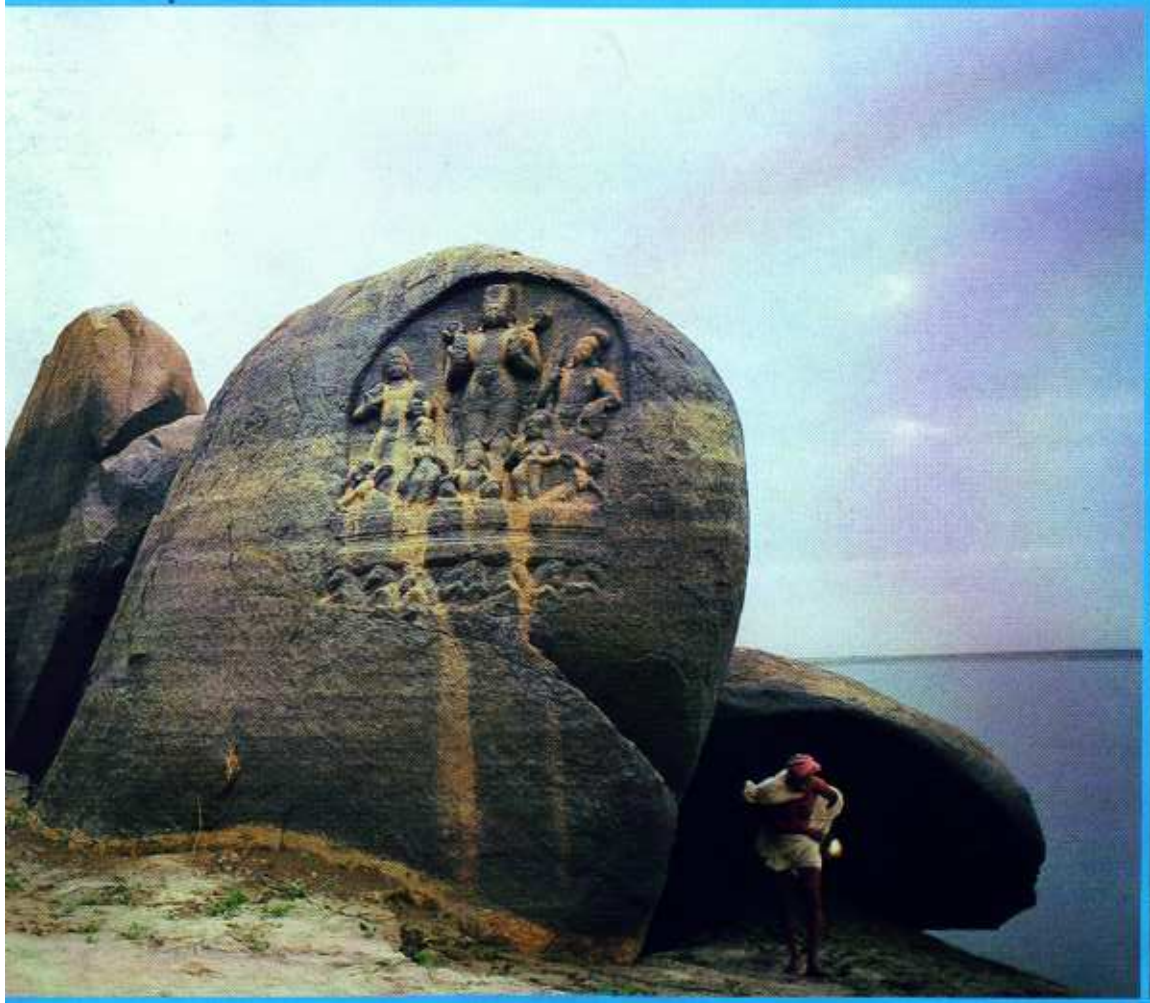

• गंगा किनारे भारत की प्राचीन सभ्यता के प्रतीक मिलते हैं।

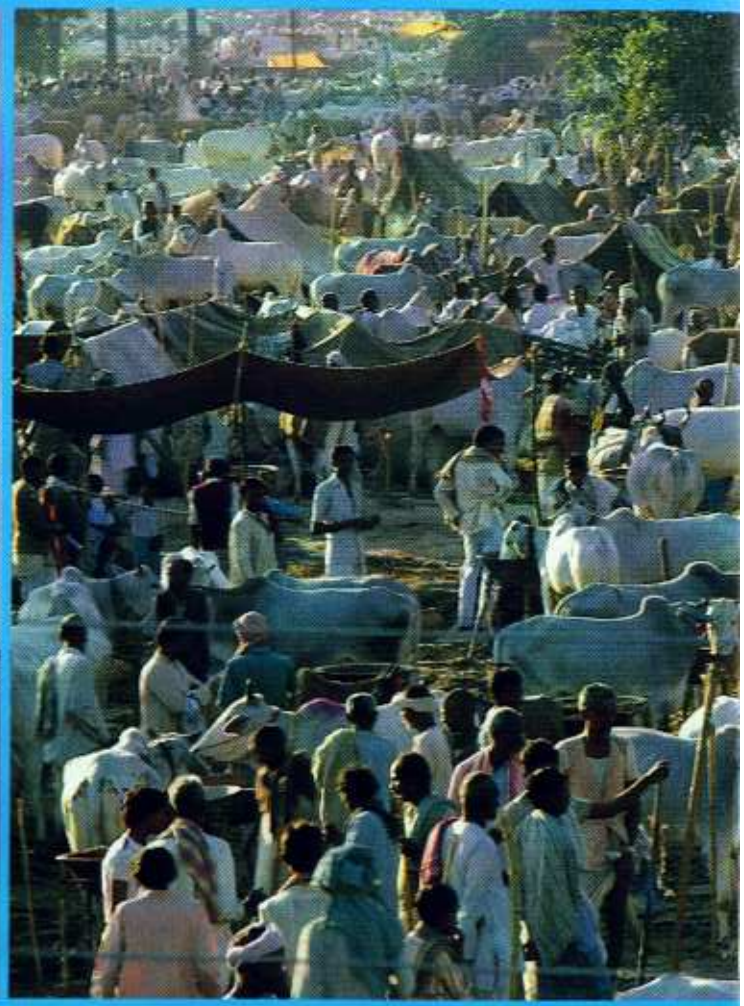

• सोनपुर में विश्व का सबसे बड़ा मवेशियों का मेला लगता है।

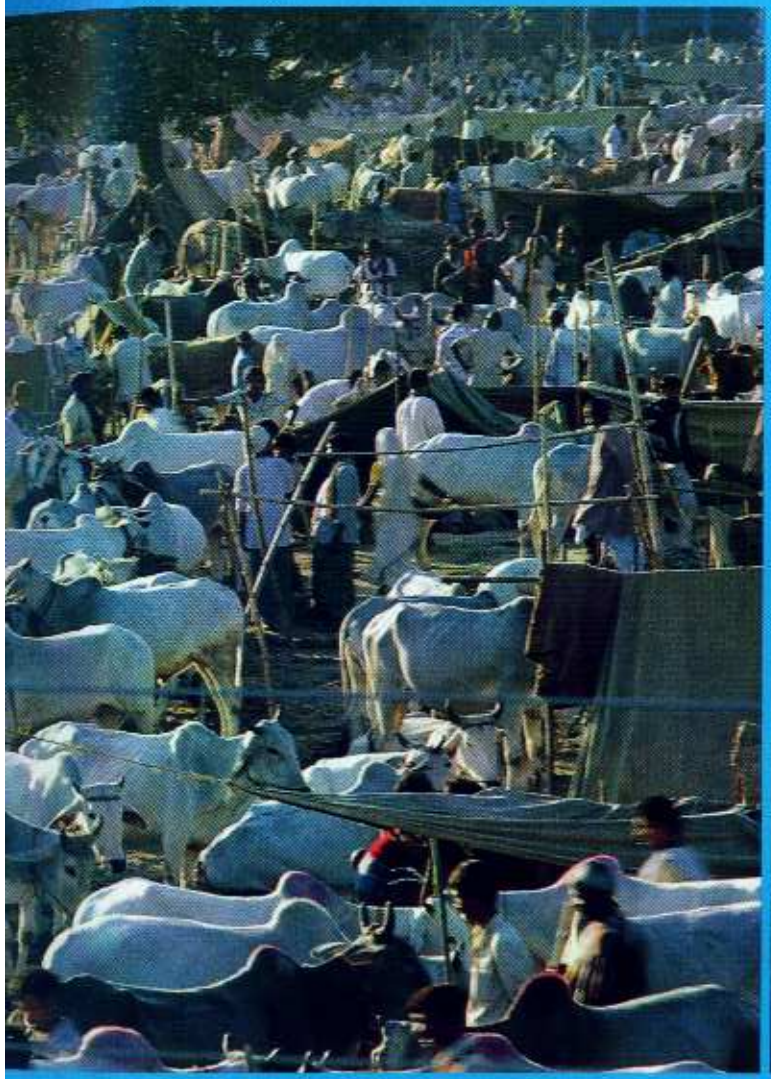

• गहरे फैले पानी में बड़े स्टीमर जहाज़ नदी पार करवाते हैं।

• दूर है किनारा, गहरी नदी की धारा,
छोटी तेरी नैया, माँझी, खेते जाओ रे...

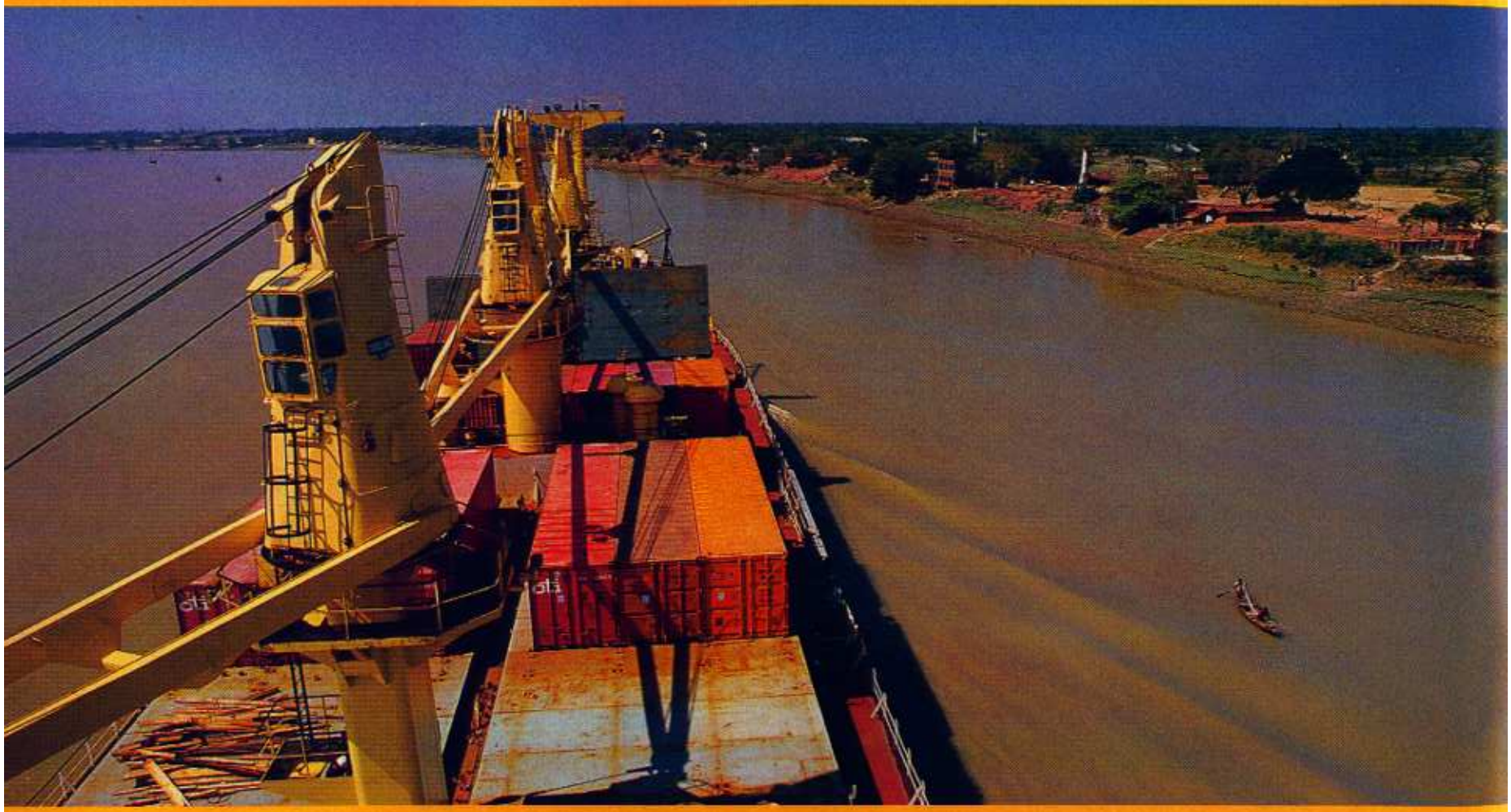

• कोलकाता शहर से आगे तो गहरी नदी में समुद्री जहाज़ भी चल सकते हैं।

• गंगा की लहरों जैसी सीधी सादी चाल हमारी,
घाट घाट का पानी पी के हमने सारी उमर गुज़ारी...

• समुद्र के खारे पानी और गंगा के मीठे पानी के मेल से कुदरत के अद्भुत रूप दिखते हैं।

● ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में,
सागर मिले कौन से जल में, कोई जाने ना...

● आख़िर गंगा जी हिमालय से हज़ार मील दूर बंगाल की खाड़ी में समा जाती हैं।

कुदरत की इस पवित्रता को तुम निहार लो,
इसके गुणों को अपने मन में तुम उतार लो,
अपनी तो एक आँख है, उसकी हज़ार हैं,
ये कौन चित्रकार है,
ये कौन चित्रकार...

# विस्तृत वर्णन

• प.3 ~ हिमालय के पर्वत विश्व में सबसे ऊँचे हैं। कश्मीर से सिक्किम तक फैली हज़ारों पहाड़ों की इस श्रृंखला का एक खण्ड गढ़वाल है।

• प.4 ~ पहाड़ी घाटियों में सदियों से एकत्रित बर्फ़ जम कर मीलों लम्बी हिमनद बन जाती है। शिवलिंग पर्वत के समीप गढ़वाल की एक महान हिमनद का पिघलता सिरा गौमुख कहलाता है।

• प.5 ~ हिमनद का पिघला पानी गौमुख से बहकर भागीरथी नदी के रूप में प्रकट होता है। घाटी की अन्य धाराओं से मिलकर भागीरथी गंगोत्री पहुंचती है।

• प.6-7 ~ गंगोत्री में गंगा जी का मन्दिर स्थापित है। भक्त-जन मानते हैं कि राजा भगीरथ के तप से यहीं पर गंगा जी स्वर्ग से उतरी थीं। सम्भव है कि सदियों पहले हिमनद का सिरा यहाँ तक आता हो।

• प.8 ~ भागीरथी का प्रवाह कई नदियों के संगम से प्रबल होता है – गंगोत्री में केदारगंगा, भैरोंघाटी में जाड़गंगा, भटवारी में दीनगढ़, टेहरी में भिलंगना... पर देवप्रयाग में सबसे महत्त्वपूर्ण संगम अलकनंदा नदी से होता है। अलकनंदा के इस मिलन के बाद इनके पानी को हम गंगा के नाम से पुकारते हैं।

• प.8-9 ~ पहाड़ों से बहती गंगा का स्वागत समतल भूमि में उत्तर भारत के दो धर्मस्थान करते हैं। पहला है ऋषिकेश, जहां युग-युग से ऋषि-मुनि, योगी, और राही आश्रय, ध्यान और ज्ञान के लिए आते रहे हैं। फिर आता है हरिद्वार – जहाँ स्नान करने भोगी भी पवित्र बनने की इच्छा से आते हैं। हरिद्वार देश के उन चार तीर्थस्थानों में से है जहाँ कुंभ मेले का आयोजन होता है।

• प.10 ~ हरिद्वार के निकट गंगा का अधिकांश पानी एक नहर में बाँध लिया गया है। 1854 में बनी यह नहर उत्तर भारत के खेतों को सींच कर फ़सलों को जीवन प्रदान करती है।

• प.11 ~ अपने पानी से वंचित गंगा का दुर्बल प्रवाह छोटे-बड़े शहरों को छूता हुआ, उनके वासियों और उद्योगों का मल और प्रदूषण समेटता हुआ आगे बहता है।

• प.12 ~ गंगा और यमुना के संगम पर बसे इलाहाबाद शहर को प्रयाग के नाम से भी पुकारा जाता है। स्वतंत्रता के संघर्ष के समय इलाहाबाद वकालत और उदारवादी विचारधारा का एक प्रसिद्ध केन्द्र था।

• प.13 ~ "काशी के कंकर शिव शंकर"... शिव जी के शहर बनारस के वासी तो यह मानते हैं कि काशी ही सारे विश्व का केन्द्र-बिंदु है... और यह भी कि बनारस में मरने वाले को मोक्ष मिल जाता है। यहाँ के अति सुन्दर घाट गंगा में स्नान करने वालों से भरे रहते हैं। पान, पहलवान और शास्त्रीय संगीत से बनारसी ढंग की असली पहचान मिलती है।

• प.14-15 ~ कन्नौज में रामगंगा, सैदपुर में गोमती नदी, इलाहाबाद में यमुना के पानी के योगदान से बढ़ती हुई गंगा बिहार में पहुँचकर एक विशाल नदी बन जाती है। घाघरा और गंदक नदियों के मेल के बाद इसका पाट कई मील चौड़ा हो जाता है। और नदी इतनी गहरी हो जाती है कि इसमें स्टीमर नौकाएँ चल सकती हैं। तटों पर पौराणिक संस्कृति और व्यापार के प्रमाण मिलते हैं। बिहार की भूमि कई धातु और खनिज पदार्थों से सम्पन्न है।

• प.16 ~ बिहार से बहती विशाल गंगा का पानी बंगाल में आकर फिर बँट जाता है। अधिकांश भाग तो पूर्व की ओर बांगलादेश में बह जाता है, और कुछ पानी दक्षिण की दिशा लेकर कोलकाता से निकलता है। पश्चिम बंगाल में गंगा को हुगली के नाम से पुकारते हैं। अब समुद्र दूर नहीं है, और बंगाल की खाड़ी से आते व्यापारी समुद्री जहाज़ डायमंड हार्बर में और कोलकाता तक आ सकते हैं। व्यापार के कारण ही कोलकाता विलायती हुकूमत के समय भारत की राजधानी थी। कोलकाता के रसगुल्ले, संदेश और मीठी दही बहुत प्रसिद्ध हैं।

• प.17 ~ सुन्दरबन के जंगलों में समुद्र के खारे पानी और गंगा के मीठे पानी के मिलन से प्रकृति के हज़ारों छोटे-बड़े अनोखे रूप पाए जाते हैं। पेड़ों की जड़ें सांस लेने के लिए खारे पानी से बाहर झांकती हैं, और भूमि के प्राणी समुद्र के जीव-जंतुओं का शिकार करते हैं।

• प.18 ~ आख़िर बंगाल का समुद्री किनारा, गंगासागर, आ ही गया... और गंगा जी की सैकड़ों मील लम्बी यात्रा का अंत हुआ। हिमालय की पिघलती हिमशिलाओं में जन्मी गंगा नदी हिंद महासागर में समा जाती है।

# गंगा की यात्रा



हिमालय
गंगोत्री
गौमुख
शिवलिंग
बद्रीनाथ
अलकनन्दा
टेहरी
ऋषिकेश
देवप्रयाग
रुड़की
हरिद्वार
यमुना
गंगा
नई दिल्ली
कानपुर
गंगा
इलाहाबाद
बनारस
चुनार
सोनपुर
पटना
मुंगेर
जहांगीरा
सुल्तानगंज
भागलपुर
नवद्वीप
चन्दननगर
श्रीरामपुर
कोलकाता
हुगली
डायमंड हार्बर
गंगासागर
बंगाल की खाड़ी
N
0
100
400 KM